चेतना के प्रकाश में दीवाली का एहसास



- राजयोगी ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

समय अपनी गति से आगे बढ़ता है और व्यक्ति परिस्थिति और आने वाली उठा-पटक के बीच अपनी उन्नति को या अवनति को देखता है। कहते हैं - समाज है, समुदाय भी है लेकिन सबके अपने-अपने नियम और कानून हैं। और उस कानून के दायरे में रहकर कार्य न करें तो समाज क्या कहेगा, समुदाय क्या कहेगा, ये बात चलती है। स्वाभाविक-सी बात है, चलनी ही है, चलेगी, लेकिन कई बार लगता है कि इतने समय से सबकुछ चल रहा है फिर भी एक दिन की रोशनी हमेशा के अंधेरे को नहीं मिटाती, ये हमें भी लगता है।

तो व्यक्ति त्योहार मना रहा है, और वो यादगार का त्योहार मना रहा है। क्योंकि कोई भी चीज़ इस दुनिया में अगर मनाई जाती है तो कभी न कभी तो उसका प्रादुर भाव हुआ है इस धरती पर। और वो आज एक त्योहार के रूप में सामने है। लोग मनाते हैं और भूल जाते हैं लेकिन हम सबकी अब जिम्मेवारी बनती है कि उस बात को समझें और सबके सामने रखें। उदाहरण के लिए हम सबके अन्दर का जो एहसास है, जो चेतना है वो बुझी-सी है, अंधकार में है।



उसमें बहुत सारे अंधकार के जाल हैं। अज्ञानता है, अपवित्रता है, अशांति है, दुःख है, तकलीफ है, दर्द है और उससे हमारी आत्मा पूरी तरह से घिरी हुई है। जब हम उसको निकालने बैठते हैं तो हमारे आस-पास बंधन आते हैं। इतने सारे बंधन देखकर और अंधकार बढ़ता जाता है। तो जब हम इसको समझने का प्रयास करते हैं, उस प्रकाश को फील करने के लिए जब हम बाहर जाते हैं और अपनी समझ, अपनी जागृति को बढ़ाते हैं तो वो धीरे-धीरे अंधकार प्रकाश की दिशा में आगे बढ़ता है। और धीरे-धीरे चेतना जागृत होती है।

चेतना के प्रकाश का एक उदाहरण ये है कि हम सभी हर कार्य करते हैं लेकिन कार्य से खुद को अलग रखते हैं, कार्य को अलग रखते हैं। हरेक चीज़ से जब हम जुड़ना बंद कर देते हैं तो हमारी खुशी बढ़नी शुरू हो जाती है। और खुशी ही जीवन का वो प्रकाश है, जो हमेशा बिना कंडीशन के जलता रहता है, बिना शर्त के जलता है। और इसी बात को अगर हम सभी जीवन में अपना लें कि हर कार्य को करें, छोड़ें, व्यक्ति से मिलें, घुलें, कार्य किया, चले गए, ऐसे ही अपने कर्म, चेतना, बुद्धि, मन हरेक चीज़ को जितना हम समझते जाते हैं उतना अन्दर उजाला होता जाता है। और जब ये उजाला पूरा प्रवीण हो जाता है तो हम सभी के जीवन में हमेशा प्रकाश रहता है।

और इसी प्रकाश को अगर हमने जगा लिया तो बाहर की दीवाली परफेक्ट हो जाएगी। और वो दीवाली हमेशा सबके अन्दर, जहन में जलती रहेगी चाहे दीपक में तेल हो, ना हो लेकिन सारा चीज़ आपके साथ हमेशा होता रहेगा। जीवन खुशियों से भरा रहेगा तो इस दीवाली इस तरह से चेतना के प्रकाश को जगाकर फैलाएं। और एक सुन्दर-सी दीवाली मनाएं।



राँची-झारखंड। रक्षाबंधन पर्व पर माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रक्षा सूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी।



आगरा-आर्ट गैलरी म्यूज़ियम(उ.प्र.)। "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण करने के पश्चात् समूह चित्र में भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रो.एस.पी.सिंह बघेल, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. संगीता तथा अन्य।



हाथरस-आनन्दपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। महिला सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शांता बहन। मौके पर उपस्थित रहे सांसद अनूप प्रधान, महिला एवं बाल विकास मंत्री बेबी रानी मौर्या, विधायक अंजुला माहोर, ब्लॉक प्रमुख पूनम पाण्डेय, पूर्व नगर पालिका प्रमुख डॉली माहोर एवं अन्य गणमान्य जन।



राजयोगी ब्र.कु. सुरज भाई

मन की बातें

प्रश्न : गुरु का निंदक ठौर न पाए, इसका सही अर्थ क्या है?

उत्तर : बहुत से लोग अनेक गुरु करते हैं, इसमें कोई डरने की बात नहीं है। क्योंकि एक गुरु से हमें एक तरह की प्राप्ति हुई, दूसरे गुरु से दूसरे तरह की प्राप्ति हुई इसमें गुरु की निंदा या ग्लानि जैसी कोई बात नहीं है। लेकिन जब भगवान का मामला सामने आ गया हो, ये वो परम सद्गुरु बनने को तैयार है, वो उसी रूप में इस धरा पर आ गया है। तो उसे अपना परम सद्गुरु के रूप में अपना लेना चाहिए। रही बात निंदा की, निंदा की बात तो ये है कि हम किसी अच्छे व्यक्ति के गुरु के शिष्य हों और हम बुरे काम करते रहें। मान लो कोई अच्छे गुरु का शिष्य है और वो शराब पीता है तो लोग कहेंगे देखा उसके गुरु ने उसे ये भी नहीं सिखाया। तो ये है गुरु की ग्लानि। और परम सद्गुरु की ग्लानि ये है कि उसने पवित्रता का मार्ग दिखाया, उसने प्युरिफिकेशन का मार्ग दिखाया, तो हम उस पर चलते रहें। अगर हम उसको तोड़ते हैं तो ये जैसे सूक्ष्म रूप में सद्गुरु की निंदा हो जाती है। और ऐसे में ठौर न मिलना माना उन आत्माओं की सद्गति नहीं होती।

प्रश्न : परमात्मा सद्गुरु के रूप में हमें सच्चा रास्ता दिखाते हैं तो क्या अब तक हमें जो रास्ते दिखाए गए वो झूठे रास्ते थे?

उत्तर : अगर आजतक दिखाए गए मार्ग अच्छे होते तो हमारे जीवन में गिरावट न होती। कलियुग का अंधकार गहरा ना होता जाता, ये प्रकाश में बदल गया होता। जरूर रास्ता ठीक नहीं दिखाया गया तभी हमें मंज़िल नहीं मिली। अन्यथा हमें मंज़िल मिल गई होती। किसी डॉक्टर का इलाज चल रहा है, बीमारी ठीक नहीं हो रही। तो ये मानना पड़ेगा कि कुछ तो गलत है। या तो मेडिसिन ठीक नहीं मिल रही है या तो डायग्नोसिस ठीक नहीं हुआ है, या डॉक्टर को समझ में नहीं आया है। हमारी गिरावट होती जा रही है,संसार दिनोंदिन पतन की ओर जा रहा है। मानसिक स्तर लोगों का बिगड़ता जा रहा है। विकार हावी होते जा रहे हैं। दुःख-अशांति अपना प्रकोप दिखाती जा रही है। तो ज़रूर कहीं न कहीं मार्ग गड़बड़ाया था। इसीलिए परम सद्गुरु ने आकर मार्ग दिखाया और वही मार्ग सत्य है जिसने करोड़ों का जीवन बदल दिया। जिसने करोड़ों के जीवन में उत्थान ला दिया। उनके जीवन को सुख-शांति से भरपूर कर दिया। प्युरिफाय कर दिया। आत्मा को शुद्धिकरण की ओर ले चला। तो इसलिए प्रैक्टिकल अनुभवों से ये जान सकते हैं कि परम सद्गुरु के द्वारा दिखाया गया मार्ग सम्पूर्ण सत्य मार्ग है। ये कहने से तर्कों से समझ नहीं आएगा। जिस मार्ग पर चलकर आप मंज़िल तक पहुंच गए वही सत्य है ना। ट्रेन आपने पकड़ी थी दिल्ली जाने की तो आप पहुंच गए तो ट्रेन ठीक थी ना। और पहुंच गए हो मुंबई तो कहेंगे ट्रेन ठीक नहीं पकड़ी। तो जिन मार्गों पर हम चलते रहे, चलते-चलते बल्कि राह भटक गए और ईश्वरीय मार्ग पर चलने से हमको मंज़िल मिलती है। यही उसके सत्य होने का प्रैक्टिकल प्रूफ है। अगर मंज़िल पर पहुंचना है तो उन रास्तों को त्याग करना ही होगा जिन रास्तों पर चलकर मंज़िल से दूर हो गए हैं। अब जब भगवान खुद मार्ग दिखा रहा है तो उसी के दिखाए मार्ग पर चलना ही कल्याणकारी है। ये सत्य है कि जो मनुष्य धोखा खा चुका है, जो मंज़िल से दूर निकल चुका है वो इस रास्ते की परख जरूर करेगा। और परखने के लिए उसे 6-8 मास इस मार्ग पर अवश्य चलना चाहिए। उसके लिए ज्ञान लेना चाहिए और राजयोग का अभ्यास करके देखना चाहिए। यदि उसको आत्म संतुष्टि होने लगे, यदि उसको लगे इस मार्ग पर चलने से हमारा चित्त शांत हो रहा है। हम मनोविकारों से छूटते जा रहे हैं। प्रभु के मिलन के सुन्दर अनुभव प्रारंभ हो गए हैं, तो यही बात उसे कंविंस करेगी, इस मार्ग पर चलने के लिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

